Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to include Bundeli language in the Eighth Schedule to the Constitution-laid.

श्री अनुराग शर्मा (झांसी): बुन्देलखण्ड मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है । लगभग 30 से अधिक जनपदों से गठित इस क्षेत्र की मुख्य बोली बुंदली है । बुंदेलखंड की अपनी अलग ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत है । बुंदेली माटी में जन्मी अनेक विभूतियों ने न केवल अपना बल्कि इस अंचल का नाम खूब रोशन किया और इतिहास में अमर हो गए । महान चन्देल शासक बिधाधर चन्देल, आल्हा-ऊदल, खेतसिंह खंगार, महाराजा छत्रसाल बुंदेला, राजा भोज, ईसुरी, रानी लक्ष्मीबाई,दद्दा मैथिलीशरण गुप्त, मेजर ध्यान चन्द्र, गोस्वामी तुलसी दास, दद्दा माधव प्रसाद तिवारी महोबा आदि अनेक महान विभूतियाँ इसी क्षेत्र से संबद्ध रखती हैं । बुंदेलखंड में ही तारण पंथ का जन्म स्थान है । बुन्देलखण्ड में शहर खजुराहो, झांसी और सागर विश्वप्रसिद्ध हैं ।

प्राचीन काल में बुंदेली में शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र, मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । एक-एक क्षण के लिए अलग-अलग शब्द हैं । गीतो में प्रकृति के वर्णन के लिए, अकेली संध्या के लिए बुंदेली में इक्कीस शब्द हैं । बुंदेली में वैविध्य है, इसमें बांदा का अक्खड़पन है और नरसिंहपुर की मधुरता भी है ।

बुंदेली भाषा को संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल करायें जाने की मांग कई वर्षों से बुंदेलखण्ड के कई संगठनों द्वारा उठायी जा रही है । सरकार से अनुरोध है कि इतने बड़े समुदाए की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुये इसे आठवी अनुसूची में शामिल कराये जाने की कृपा करे ।